श्री आदिनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण
सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री
परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)
Website : www.jainswastisandesh.com
Link to Facebook : swastibhushanmataji

श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023, ज्ञानतीर्थ, मुरैना (म.प्र.)
पावन निर्देशन - परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी
पावन अवसर पर प्रकाशित

कृति : **श्री आदिनाथ विधान**

षष्ट संस्करण : **1100 प्रतियाँ**

प्रकाशन वर्ष : **2023**

न्यौछावर राशि : **25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)**

प्रकाशक : **श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**

प्राप्ति स्थान :

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

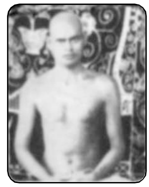

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)

जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)

जन्म नाम – श्री केवलदास जैन

पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन

माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन

क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)

मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)

आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)

समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

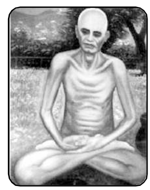

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)

जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)

जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन

पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन

माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन

ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)

मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)

दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से

आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)

समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

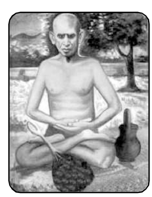

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)

जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन

पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन

माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन

क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)

ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)

मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)

दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज

आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

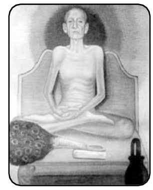

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

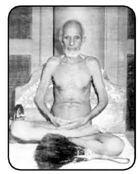

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

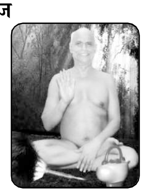

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी)
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व
गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

उपकार की महिमा

एक माली उद्यान सजाता है, उसमें खून पसीना बहाकर मेहनत कर सुन्दर-सुन्दर फल और फूल के वृक्षों से भर देता है। उसकी मेहनत के प्रतिफल वे वृक्ष भी माली के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर माली को फूल और फल प्रदान करते हैं । एक कुत्ता अपने मालिक की रोटी खाकर उसके प्रति कृतज्ञता में उसकी रक्षा करता है और समय आने पर अपनी जान भी गवां देता है । जटायु का उदाहरण भी प्रत्यक्ष है। राम लक्ष्मण सीता की सेवा के उपकार का प्रतिफल सीता की रक्षा में उसने अपनी जान भी गवां दी । एक नहीं हजारों उदाहरण देखने को मिलते हैं ।

वृक्ष गर्मी में शीतल छाया देते हैं । मेघ जल बरसा कर पृथ्वी को आप्लावित कर देते हैं, जिससे अन्न उपजता है । चंद्रमा चांदनी के द्वारा अमृत वर्षा करता है, जिससे फलों में मीठा रस उत्पन्न होता है एवं ठंडक होती है । धरती संपूर्ण सृष्टि का भार लिये क्षमा धारण किये है । यहाँ तक कि पशु पक्षी सूखी घास खाकर हमें जीवनोपयोगी पदार्थ देते हैं । सृष्टि और प्रकृति की खुली किताब हमें प्रतिपल परोपकार का पाठ पढ़ा रही है । कृतज्ञता उपकार प्रकृति पशु पक्षी सभी में व्याप्त है । मनुष्य पर्याय का मिलना, संपूर्ण अंग उपांग ठीक मिलना, बुद्धि का स्वस्थ और अच्छी मिलना, जैन कुल में जन्म मिलना, यह सब भी धर्म का उपकार है । बिना धर्म के पुण्य नहीं, बिना पुण्य के सुख नहीं मिलता । अतः प्रकृति दत्त उपकार को हमें न भूलकर हमें भी उपकार करते रहना चाहिये ।

प्रभु के चरणों में भिखारी नहीं पुजारी बनकर जाना चाहिये । भिखारी मांगने जाता है, पुजारी पूजा के माध्यम से प्रभु गुणगान करता है । भिखारी जाता प्रतिदिन है और जितना मिला है उसका धन्यवाद नहीं करता जितना नहीं मिला उसकी शिकायत करता है । प्रभु के चरणों में तो शांति का खजाना है, लेना तुम्हारी सामर्थ्य के ऊपर निर्भर करता है । प्रभु नाम और गुणगान से करोड़ों पाप कट जाते हैं ।

अतः यह विधान प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ प्रभु के गुणों का स्तवन है । आदि प्रभु की स्तुति हम तो क्या आचार्य मानतुंग ने की, इन्द्रों

ने की, हममें क्या शक्ति है जो प्रभु के अनंत गुणों का बखान कर सकें। यह विधान गुरुवर के आशीर्वाद से लिखा है। गुरुवों का हम पर बड़ा उपकार है जिनके द्वारा हमें भगवान आदिनाथ से महावीर तक प्रभु की वाणी का रसपान करने को मिला। उनके उपकार को करोड़ो जन्म तक नहीं भुला सकते। उन्होनें हमारे शास्त्रों को लिपिबद्ध कराया। जिससे जैन धर्म की परम्परा अक्षुण्ण रूप से चली आ रही है।

– आर्यिका स्वस्ति भूषण

भक्ति रस का प्रवाह

एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधि।
पठेदएटोत्तरं नाम्ना, सहस्रं पापशान्तये॥

आचार्य जिनसेन स्वामी के द्वारा रचित सहस्रनाम स्त्रोत भक्ति का एक उत्कृष्ट प्रमाण है जिसमें उन्होंने वर्णन किया कि भगवान की जो इस प्रकार (अच्छी प्रकार) से भक्ति करता है एवं एक हजार आठ नामों के द्वारा जो भगवान का गुणगान करता है, उसके हजारों पाप स्वयमेव ही शांति को प्राप्त होते हैं!

यह भक्ति ही श्रावक या गृहस्थ को एक मात्र कारण है जो संसार सागर के दुःखों से बाहर निकाल सकती है, इसी भक्ति के बल पर ही श्रीमान मतिसागर सेठ ने अपने पुत्र की पुनः प्राप्ती की। मुनि श्री माङ्गतुंगाचार्य महाराज ने भक्ति के बल पर ही जैन धर्म की पताका को सर्वोपरी स्थान दिलवाया। रानी उर्मिला ने जैन धर्म का रथ सबसे आगे चलवाया। सती सीता की आग से रक्षा तो द्रोपदी की चीर हरण के समय दुःशासन से रक्षा। ऐसे ही अनेकानेक उदाहरण भक्ति के विषय में, कथा ग्रंथों में आसानी से पढ़े जा सकते हैं अनेकानेक लोगों के मुख से सुने जा सकते हैं। और ग्रहस्थ के लिए परम पूज्य आचार्य गुरुदेव समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में छः परम कर्तव्य दिये हैं :—

देव पूजा गुरुपास्ति स्वाध्यायः संयम तपः!
दानश्चेति ग्रहस्थानाम् षट् कर्माणि दिने दिने॥

देव पूजा प्रथम कर्तव्य है, जिसे प्रत्येक ग्रहस्थ को करना ही चाहिए, यह देव पूजा नित्य पूजा एवं विशेष पूजा जिसे विधान कहा जाता है...जिनेन्द्र भगवान की यह पूजन बड़े ही हर्ष के साथ उल्लास के साथ एवं प्रभावना के साथ करना चाहिए, पूर्व में लिखे गये विधान आदि पूजायें अधिकांश संस्कृत भाषा, प्राकृत भाषा या डुढारी भाषा या ब्रज मिश्रित भाषाओं में प्राप्त होती है, जो

सामान्य जन को, भाषा का ज्ञान न होने के कारण, मतिभ्रम की स्थिति उत्पन्न कराती हैं या क्रिया करने में अरुचि उत्पन्न करती हैं। इसीलिए कई बार श्रावकों का माताजी से आग्रह होता है कि माताजी हमको कोई ऐसी पूजाऐं यदि उपलब्ध हो जाऐं जिनको हम समझ सकें तो हम रुचि पूर्वक पूजा आदि आवश्यक कर सकते हैं। पूज्य माताजी ने भक्तों की इस दुविधा को समझते हुए अनेक रचनाऐं की हैं, लगभग अभी तक माताजी की लेखनी से सौ से अधिक कृतियों की रचना हो चुकी हैं और वह सभी कृतियाँ प्रकाशित होकर जन सामान्य तक पहुँच भी चुकी हैं!

यह "श्री आदिनाथ विधान", नामक कृति अभी तक चार संस्करणों में प्रकाशित हो चुकी है यह पाँचवाँ संस्करण पुष्प आपके हाथों में पहुँच रहा है।

जब परम पूज्यनिया आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी का प्रवास श्री दिगम्बर जैन मंदिर धर्मपुरा दिल्ली में था, उसी समय आदिनाथ भगवान का जन्मकल्याणक का महोत्सव था, श्रावकों की तीव्र इच्छा थी माताजी के द्वारा रचित विधान ही इस अवसर पर किया जाए। सभी ने माताजी से निवेदन किया और करुणा स्वभाव को धारण करने वाली, जिन्हें किसी भी प्रकार की काव्य रचना करने में महारथ हासिल है, सो इन्होंने सहज ही स्वीकार कर लिया और इस सुन्दरतम कृति की रचना मात्र चार दिनों में ही सम्पन्न हो गई। बड़े ही धूमधाम के साथ विधान करके जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया।

इस कृति का शब्द शब्द चित्त को आकर्षित करने वाला है अतः श्रावकों को चाहिए कि वह पूर्ण मनोयोग के साथ भगवान की भक्ति करें! और परम पूज्यनिया माताजी का आशीर्वाद निरन्तर ही हम श्रावकों पर बना रहे! इन्हीं पावन पुनीत भावनाओं के साथ माताजी के चरणों के कोटिश वन्दामि-वन्दामि-वन्दामि।

शालू दीदी
(संघस्थ)

श्री आदिनाथ विधान की रचना मात्र दो दिन में ....

जैन शास्त्रों में श्रावक के षट् आवश्यक कार्य देव पूजा, गुरु की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान में, प्रथम स्थान देव पूजा का बताया गया है । क्योंकि आत्म कल्याण करने हेतु सबसे सरल व व्यवहारिक कार्य देव पूजा ही है । देव पूजा में श्रावक जब पूरे भावों से प्रभु के गुणों का गुणगान करके भक्ति करता है तो प्रभु के गुण वर्णन में अपनी आत्मा के गुणों का आभास करने लगता है । जितनी गहराई से पूजा की जायेगी उतने ही आत्मा के गुण प्रकट होने लगते हैं । साधक फिर पदार्थों से विमुख होकर आत्माभिमुख हो जाता है । पूजाओं के रचनाकारों द्वारा निरन्तर पूजा की पुस्तकें लिखी जा रही हैं । जिनका उपयोग पाठकों द्वारा किया जा रहा है । परन्तु पूर्व में लिखी अधिकांश पूजा की पुस्तकों में भाषा की क्लिष्टता से पाठक के पूर्ण भाव नहीं बन पाते थे । इसी का निराकरण करने हेतु परम पूज्य आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी ने अपनी विशिष्ट लेखन शैली में पूजा विधानों की रचना की है । माता जी द्वारा लिखित पूजा विधानों में भाषा व भाव इतने सरल सुग्राह्य व उत्तम छन्दों का प्रयोग कर लिखे गये हैं कि उनकी रचनाओं के लिये पाठक लालायित रहते हैं । माता जी अभी तक 85 पुस्तकों की रचना पूर्ण कर चुकी हैं । इनके लिखे विधानों को पूरे भारत में सराहा जा रहा है । माता जी उस समय दिल्ली के दि. जैन नया मन्दिर धर्मपुरा में विराजमान थी और भगवान 1008 श्री आदिनाथ का जन्म कल्याणक मनाया जाना था । पर भक्तों की भावना थी कि इस पर्व पर माता जी के द्वारा लिखे गये विधान से ही पूजा की जाये । मात्र चार दिवस पूर्व माता जी के श्री चरणों में भक्तों ने निवेदन किया और माता जी ने मात्र दो दिन में ही पूरे विधान की रचना पूर्ण करके भक्तों पर उपकार कर दिया । ऐसी विलक्षण लेखन की स्वामिनी माता जी का यह विधान आपके हाथों में है । जब आप इसे पढ़ेंगे तो आपको स्वयं ही इसकी महत्ता का अनुभव होगा । एक-एक पंक्ति में भक्ति भाव व विरक्ति भाव का सुन्दर प्रयोग मनोहारी है आप सभी उनके इस विधान के साथ-साथ अन्य पूजा व विधानों का उपयोग करके आत्म कल्याण करें ।

निवेदक

स्वराज कुमार जैन (अध्यक्ष)

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

श्री आदिनाथ विधान

माँडला

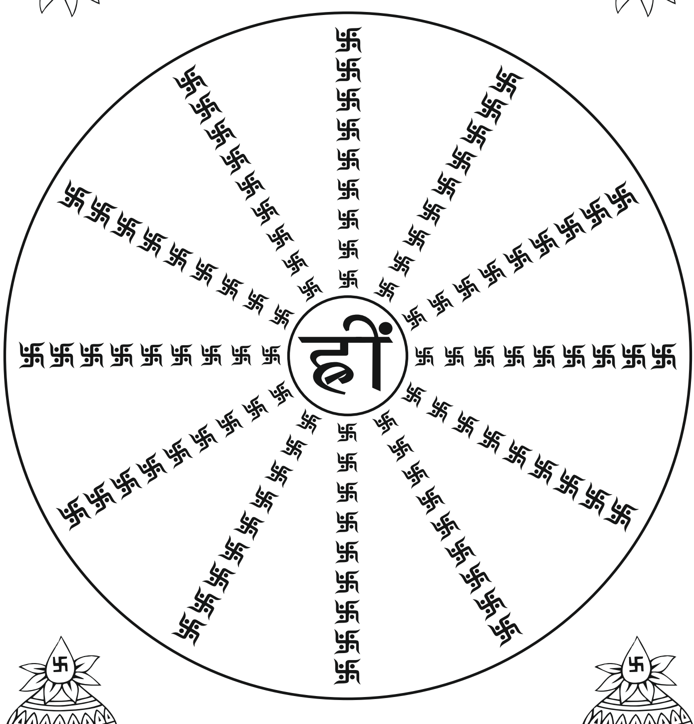

श्री आदिनाथ विधान

स्थापना (त्रिभंगी छंद)

आदि में आये, आदि कहाये, सृष्टि जब हरषाती है ।
मुस्कान अधर पर, ध्यान स्वयं पर, निज आनंद बताती है।।
मुक्ति पथ गामी, हम अनुगामी, बनने को पूजा करते ।
आओ जिनवर जी, हो मनहर जी, हृदय में हम तुमको धरते।।

दोहा

युग के आदि ब्रह्म हो, उजड़ा चमन खिलाय ।
भक्तों ने पूजा करी, शत-शत शीश झुकाय ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

त्रिभंगी छंद

जन्मों का बंधन, मरण में क्रंदन, मैं अनादि से करता हूँ ।
यह भूल हमारी, मति बिगाड़ी, दोष करम को देता हूँ ।।
हे आदि जिनेश्वर, भक्त के ईश्वर, आकर धीर बंधा देना।
संसार न भटकूँ, जग न अटकूँ, मेरे कष्ट को हर लेना ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों से तपते, नाम को जपते, शीतलता को पाना है ।
ये जगत भ्रमाये, जग अटकाये, पास तुम्हारे आना है ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंचल मन मेरा, घूमे घनेरा, भटक-भटक कर हार गया ।
स्थिर पद पाऊँ, समता लाऊँ, पूजा भक्ति भाव भया ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये पुष्प सुहाने, लगे लुभाने, इंद्रिय सुख में डूबा हूँ ।
वैराग्य दिलाओ, पास बुलाओ, इस संसार से ऊबा हूँ ।।
हे आदि जिनेश्वर, भक्त के ईश्वर, आकर धीर बंधा देना ।
संसार न भटकूं, जग न अटकूं, मेरे कष्ट को हर लेना ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये भोजन शाला, बनी है जाला, पेट भरन में पाप किया ।
खाने में संयम, लूँ कुछ नियम, जिसने भाव को शुद्ध किया ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाहर उजियाला, मन अंधियारा, अब अज्ञान का फैला है ।
अज्ञान मिटा दो, ज्ञान सिखा दो, बनूँ चरण का चेला है ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

आतम अमृतमय, कर्म है विषमय, कर्म के स्वाद को लेते हैं ।।
अमृत ना पाये, कर्म भ्रमाये, जीवन में दुख भरते हैं ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवन है सूना, दुख है दूना, मन में आन समा जाओ ।
फल मैं ये चाहूँ, चरण को पाऊँ, दर्शन नाथ दिखा जाओ ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिंतन में रहना, यही है कहना, सार्थक जीवन हो जाये ।
पूजा प्रभु तेरी, कटेगी बेड़ी, अर्घ्य चरण में ले आये ।।
हे आदि ....

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ्य

(चौपाई)

इतने रतन वहां भू बरसे, नर नारी सब झूम के हरषे ।
गर्भ में आये हैं जिन राजा, हैं प्रसन्न मरु नाभिराजा ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितीयां गर्भमंगल मंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म हुआ जग घंटे बाजे, मोह नींद से सब ही जागे ।
नगर अयोध्या बजी बधाई, सारे जग में खुशियां छाई ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मृत्यु देख वैराग्य समाया, यह संसार तुम्हें न भाया ।
तजा परिग्रह हुये दिगम्बर, महामुनि का घर भू अम्बर ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां तपोमंगल मंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चार घातिया कर्म नशाया, केवलज्ञान का दीप जलाया ।
समवशरण में भक्त भी आये, दिव्यध्वनि का अमृत पाये ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण एकादश्यां ज्ञानमंगल मंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों करम से रिश्ता तोड़ा, मुक्ति से जा नाता जोड़ा ।
सिद्धालय के बने निवासी, स्वयं-स्वयं में आत्म प्रवासी ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री आदिप्रभु गुण अर्घ्यावली

(चौपाई)

तरु अशोक के बैठे नीचे, ध्यान के अंदर आपहि पहुँचे।
रोग शोक दर्शन से भागे, भक्त स्वयं आतम में जागे ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वर्णमयी सिंहासन प्यारा, उस पर प्रभु का रूप है न्यारा ।
ऐसा आसन मैं भी पाऊँ, चरण प्रभु के शीश झुकाऊँ ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन भुवन के अधिपति जिनवर, तीन छत्र कहते हैं मनहर ।
प्रभु के ऊपर छत्र की छाया, भक्त के ऊपर प्रभु की छाया ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूरज सम भगवान हमारे, चन्द्र के सम सुर चमर ढुरावें ।
स्वर्ण मेरु पर झरना बहता, अतिशय सुंदर रूप को कहता ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन का तेज बना भामंडल, उजियारा फैले भू मंडल ।
सूर्य चन्द्र का तेज भी हारा, छुपा कहीं जाकर अंधियारा ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुंदुभि बाजे यश गाते हैं, कर्ण सभी के सुख पाते हैं ।
हम करते गुणगान तुम्हारा, यश पाऊँ भक्ति के द्वारा ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुंदुभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भौतिक सुख की नहि जरुरत, अतिशय कारी प्रभु की मूरत ।
कल्पवृक्ष के सुमन गिरे हैं, मंद सुगंधित पवन फिरे हैं ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्म ज्ञान आतम से दीना, भक्तों ने आतम से लीना ।
दिव्य ज्ञान दिव्यध्वनि में आया, भक्त ने चरणन शीश झुकाया॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वयं-स्वयं से दीक्षा धारी, नहीं गुरु न शिष्य बिहारी ।
नमः सिद्ध कह दीक्षा लीनी, फिर दृष्टि आतम में दीनी ॥9॥

ॐ ह्रीं आत्म सामर्थ्य प्राप्ताय श्री स्वयंभुवे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इंद्रिय सुख से नाता तोड़ा, निज आतम से नाता जोड़ा ।
अपनी आतम के हो भोक्ता, भक्त आपके नाम को जपता ॥10॥

ॐ ह्रीं आत्म सुख प्राप्ताय श्री भोक्ता जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म मरण फिर नही करोगे, कर्मों का दुख नही भरोगे ।
आतम अजर अमर अविनाशी, आप हुये सिद्धालय वासी ॥11॥

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री अपुनर्भवः जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब विद्यायें चरण में आयें, सब ही अपना ईश बनायें ।
आज्ञा पाने को हैं प्यासी, किन्तु आप हैं आत्म प्रवासी ॥12॥

ॐ ह्रीं विश्वविद्या प्राप्ताय श्री विश्वविद्या जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक इक क्षण में देखा, केवल ज्ञान के कारण लेखा ।
विश्व दृष्टा से कुछ न छुपता, भक्त चरण में आकर झुकता ॥13॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन प्राप्ताय श्री विश्वदृष्टा जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाग्य विधाता तुम्हें बताया, इसीलिये मैं शरण में आया ।
मेरा भाग्य भी तुम्ही बनाओं, अपने चरण के पास बुलाओ ॥14॥

ॐ ह्रीं भाग्योदयाय श्री धाता जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सारे जग में ज्येष्ठ तुम्हीं हो, सब जीवों में श्रेष्ठ तुम्हीं हो ।
सारा जग चरणों में झुकता, भक्त तेरे गुणगान को करता ॥15॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री जगत ज्येष्ठ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुण अनंत की मूरत न्यारी, भक्त छवि लख हैं बलिहारी ।
विश्व मूर्ति गुण तेरे गायें, चरणन में हम अर्घ्य चढ़ायें ॥16॥

ॐ ह्रीं चारू छवि प्राप्ताय श्री विश्व मूर्ति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनियों के प्रभु ईश बने हैं, भक्त आपके बहुत घने हैं ।
नाम जिनेश्वर इन्द्र ने गाया, भक्त ने आकर शीश झुकाया ॥17॥

ॐ ह्रीं इन्द्रिय संयम प्राप्ताय श्री जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम्हीं युगादि पुरुष कहाये, आदि समय में आदि आये ।
हम सब भगवन दास तिहारे, चरणों में हमें दे दो सहारे ॥18॥

ॐ ह्रीं जिन शरण प्राप्ताय श्री युगादि पुरुष जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म चक्र आगे चलता है, संग आतम का सुर बजता है ।
धर्म चक्र आदि में चलाया, मुक्ति का रस्ता दिखलाया ॥19॥

ॐ ह्रीं आत्म धर्म प्राप्ताय श्री विश्व धर्मचक्र जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह शत्रु को आपने जीता, मुक्ति गमन में हुई सुभीता ।
हम भी मोह शत्रु को जीतें, हो जाये कर्मों से रीते ॥20॥

ॐ ह्रीं मोह शत्रु विनाशनाय श्री मोहादि जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

दयावान करते दया, दया ध्वजा फहराय ।
दीन बंधु करुणा निधि, चरणन शीश झुकाय ॥21॥

ॐ ह्रीं दया धर्म प्राप्ताय श्री दयाधर्म जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

योगी जन अर्चन करें, योगीश्वर कहलायें ।
गणधर शीश झुकावते, हम भी शीश झुकायें ॥22॥

ॐ ह्रीं त्रियोग विजय प्राप्ताय श्री योगीश्वर जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म मैल धोया प्रभु, आतम शुद्ध कराये ।
भक्ति से मल धोये हम, शत-शत शीश झुकाये ॥23॥

ॐ ह्रीं आत्म शुद्धि प्राप्ताय श्री शुद्ध जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्व ज्ञान की पूर्णता, बुद्ध नाम को पायें ।
बुद्धि कुछ हमको मिले, चरणन अर्घ्य चढ़ायें ॥24॥

ॐ ह्रीं कुशल बुद्धि प्राप्ताय श्री बुद्ध जिनाय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्म कार्य को सिद्ध कर, हो सिद्धार्थ महान् ।
कार्य सिद्ध होवें मेरे, करता नित्य प्रणाम ॥25॥

ॐ ह्रीं कार्य सिद्धाय श्री सिद्धार्थ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शासन तेरा है प्रभो, अनुशासन में भक्त ।
सिद्ध के शासन से हुआ, आतम गुण से युक्त ॥26॥

ॐ ह्रीं अनुशासन गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध शासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्यान में तुमको ध्यावते, ध्येय बना तुम्हें नाथ ।
आराधक हो भक्त के, हमें दिखाओ पाथ ॥27॥

ॐ ह्रीं ध्यान ध्येय प्राप्ताय श्री ध्येय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्व स्वभाव न छोड़ते, अच्युत नाम धराय ।
मुझको ऐसी शक्ति दो, तुम जैसा बन जायें ॥28॥

ॐ ह्रीं आत्म स्वभाव प्राप्ताय श्री स्वभाव जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीनों पन दुखमय हुये, किन्तु बुढ़ापा रोग ।
अजर प्रभु मेटो इसे, मिले आप संयोग ॥29॥

ॐ ह्रीं जरा रहिताय श्री अजर जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ति लक्ष्मी के पति, श्री पति नाम धराय ।
श्री पति का वरदान दो, शत-शत शीश झुकाय ॥30॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री श्रीपति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ब्रह्मचर्य पालन करे, धारण कीना आप ।
आत्म शुचि शुद्धि हुई, करुँ आपकी जाप ॥31॥

ॐ ह्रीं शुचि मन प्राप्ताय श्री श्रीशुचि जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म काठ को नाश कर, आतम अमल बनाये ।
मैं भी निर्मल बन सकूँ, इससे अर्घ्य चढ़ाये ॥32॥

ॐ ह्रीं निर्मल मन प्राप्ताय श्री अमल जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाधा तुमसे दूर हैं, ना आती हैं पास ।
भक्तों की भी दूर हों, यही प्रभु से आश ॥33॥

ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री निराबाध जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चित्त शांत स्थिर हुआ, नहीं क्षोभ का काम ।
चित्त मेरा भी शांत हो, बारंबार प्रणाम ॥34॥

ॐ ह्रीं क्षोभ रहित हृदय प्राप्ताय श्री अक्षोभ्य जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जहाँ चरण जिनवर धरें, धर्म तीर्थ बन जाये ।
तीर्थंकर आदिप्रभु, चरणन शीश झुकाये ॥35॥

ॐ ह्रीं भवसागर पाराय श्री धर्म तीर्थ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म ध्वजा फहराय दी, चिन्ह वृषभ बतलाय ।
शांति चहुंदिश में बहे, इससे अर्घ्य चढ़ाये ॥36॥

ॐ ह्रीं आत्म धर्म प्राप्ताय श्री वृषभ ध्वज जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाभि स्वर्ण समान थी, हिरण्य नाभि कहलाये ।
प्रभु नाम जपते रहो, जीवन में सुख पाये ॥37॥

ॐ ह्रीं प्रभु दर्शन प्राप्ताय श्री हिरण्य नाभि जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूतनाथ बन प्राणी की, रक्षा करी सदा ।
छाया जिसको भी मिले, ले ली कर्म विदा ॥38॥

ॐ ह्रीं प्रभु कृपा प्राप्ताय श्री भूतनाथ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सबको अच्छे तुम लगो, सुंदर सुगुण सुधाम ।
प्रष्ठ नाम से पूजते, बारंबार प्रणाम ॥39॥

ॐ ह्रीं चारू सुख प्राप्ताय श्री प्रष्ठ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय पुण्य के धारी हो, श्रेष्ठ बने जगनाथ ।
श्रेष्ठ ज्येष्ठ हम भी बनें, मिले आपका साथ ॥40॥

ॐ ह्रीं श्रेष्ठ पुण्य प्राप्ताय श्री श्रेष्ठ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन.......)

नहि शोक जरा भी रहता, आतम सुख झरना बहता ।
बाहर से मोह हटाया, स्वाधीन सरस सुख पाया ॥

चरणों की धूल बना लो, जिनवर मुझको अपना लो ।
सौरभ अपनी बिखराओ, कर्मों की गंध मिटाओ ॥41॥

ॐ ह्रीं कर्म शोक नाशाय श्री विशोक जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहि राग द्वेष की माया, अब बची न दुख की छाया ।
सच्चा सुख इससे पाया, पाने को मैं भी आया ॥42॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं क्षोभ संसार वैराग्य प्राप्ताय श्री विराग जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीनों लोको के ज्ञाता, फिर भी पाई है साता ।
कर्ता भोक्ता नहि मानो, बस ज्ञाता दृष्टा जानो ॥43॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं विद्वान गुण प्राप्ताय श्री विद्वान जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ईर्ष्या की अग्नि जलाये, हर पल में हमें रुलाये ।
ईर्ष्या से रहित हो स्वामी, दुख मेटो अंतर्यामी ॥44॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं ईर्ष्या नाशाय श्री वीतमत्सर जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांति पा शांति बांटी, दुख की क्यारी सब छांटी ।
आत्मिक शांति मैं पाऊँ, अपने चेतन को ध्याऊँ ॥45॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं आत्म शान्ति प्राप्ताय श्री शान्ति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों का होम किया है, तप का यह यज्ञ रचा है ।
कर्मों की सेना भागी, अब मेरी आतम जागी ॥46॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं प्रभु पूजा व्रत प्राप्ताय श्री यागांज्ञ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतन का ध्यान लगाया, अध्यातम अमृत पाया ।
तन तज चेतन को पाऊँ, संसार में फिर न आऊँ ॥47॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं अध्यातम अमृत प्राप्ताय श्री अमृत जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मेरु सम अचल हुये हो, आतम का ध्यान किये हो ।
मोही जग से मुख मोड़ूँ, बस आपसे नाता जोड़ूँ ॥
चरणों की धूल बना लो, जिनवर मुझको अपना लो ।
सौरभ अपनी बिखराओ, कर्मों की गंध मिटाओ ॥48॥

ॐ ह्रीं अचल ध्यान प्राप्ताय श्री अचल जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों का लेप उतारा, आतम का रूप निहारा ।
प्रभु मुद्रा हमें सुहाए, ऐसी मुद्रा हम पायें ॥49॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं कर्म लेप रहिताय श्री निर्लेप जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूरज सम तेज तुम्हारा, भागा जग का अंधियारा ।
हो सूर्य मूर्ति जिनदेवा, आतम की करते सेवा ॥50॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं अनंत तेज प्राप्ताय श्री सूर्य मूर्ति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंत्रों के देव तुम्ही हो, सब के आराध्य तुम्ही हो ।
सब मंत्र मूर्ति भी कहते, मंत्रों में आपहि रहते ॥51॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं मंत्र स्थित देवता नमस्काराय श्री मंत्र मूर्ति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषारथ सफल हुआ है, आतम का ध्यान किया है ।
जग के पुरुषार्थ तजूँगा, बस नाम को नित्य भजूँगा ॥52॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं शुभ कृत कराय श्री कृतार्थ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो मुदित मनोहर स्वामी, मुद्रा प्रसन्न जगनामी ।
भक्ति में गुण को गाया, मन हो प्रसन्न सुख पाया ॥53॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं अंतरंग प्रसन्नता प्राप्ताय श्री प्रसन्न जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुरुषों में उत्तम पाये, पुरुषोत्तम नाम कहाये ।
आतम पुरुषार्थ जगाऊँ, दुख संकट शीघ्र नशाऊँ ॥

चरणों की धूल बना लो, जिनवर मुझको अपना लो ।
सौरभ अपनी बिखराओ, कर्मों की गंध मिटाओ ॥54॥

ॐ ह्रीं उत्तम पद प्राप्ताय श्री उत्तम पुराण पुरूषोत्तम जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुर नर पशु चरणन आते, तेरी स्तुति को गाते ।
स्तुति के योग्य हुये हो, क्योंकि निज ज्ञान लिये हो ॥55॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं उत्तम रूप प्राप्ताय श्री स्तवन जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सारे गुण शरण में आये, गुण नायक आप कहाये ।
कुछ गुण हमको भी दे दो, अवगुण को मेरे हर दो ॥56॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं सर्व गुण प्राप्ताय श्री गुणनायक जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्यों से पुण्य है बढ़ता, पुण्यात्मा पूजा करता ।
तुम पुण्य नाम के धारी, तेरी महिमा है न्यारी ॥57॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट पुण्य प्राप्ताय श्री पुण्य जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्ष्मी चरणों की दासी, विद्यायें चरण की प्यासी ।
अभिमान जरा न आया, आतम में ध्यान लगाया ॥58॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं मार्दव धर्म प्राप्ताय श्री निर्मद जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन सब कलंक को धोया, और बीज मुक्ति का बोया।
मेरे कलंक भी धोयें, और बीज मुक्ति का बोयें ॥59॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं निकलंक सौख्य प्राप्ताय श्री निष्कलंक जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वैभव अचिंत्य के धारी, संसार की खुशियां हारी ।
आतम वैभव मैं पाऊँ, जग की माया तज आऊँ ॥60॥
चरणों की ....

ॐ ह्रीं अचिंत्य वैभव प्राप्ताय श्री अचिन्त्य वैभव जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शेर चाल (दे दी हमें.........)

तिर्यंच नरक मनुज के, दुःखो से बचाओ ।
तुम ही पिता हमारे हो, मुक्ति में बुलाओ ॥
आतम का ज्ञान देके, आत्म तृप्त कीजिये ।
संतोष दे कुछ ज्ञान दें, औ ध्यान दीजिये ॥61॥

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री पिता जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मनवांछा पूरी आप करो, कल्पवृक्ष हो ।
प्रभु नाम जपें तेरा, हमरे रक्ष-रक्ष हो ॥62॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं मन वांछित फल प्राप्ताय श्री कल्पवृक्ष जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं साधना करुँ तो साध्य, तुमको बनाऊँ ।
मैं कार्य करुँ कोई, हेतु तुम्हें मनाऊँ ॥63॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री हेतु जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्षण हैं विलक्षण प्रभु के, भाग्यवान हैं ।
पूजा करी जो आपकी, हम भाग्यवान हैं ॥64॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं शुभ लक्षण प्राप्ताय श्री लक्षण जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संकल्प को हमारे प्रभु सिद्ध कीजिये ।
दृढ़ता रहे व्रतों में अपने, ज्ञान दीजिये ॥65॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं शुभ संकल्प धारणाय श्री सिद्ध संकल्प जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर जोड़ करके ऋद्धियां, तुम द्वार पे आयी ।
भक्तों को दे आशीष, सबने भक्ति दिखायी ॥66॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं ऋद्धिधर गुरु सान्निध्य प्राप्ताय श्री महर्द्धिक जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

होता जनम ना आत्मा का, मृत्यु न होती ।
ये आत्मा अनादि निधन, कर्म से रोती ॥
आतम का ज्ञान देके, आत्म तृप्त कीजिये ।
संतोष दे कुछ ज्ञान दें, औ ध्यान दीजिये ॥67॥

ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित सुख प्राप्ताय श्री अनादि निधन जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वक्ताओं में तुम श्रेष्ठ कोई, तुमसे न ऊँचा ।
बिन बोले सारा बोलते, मैं चरण में पहुँचा ॥68॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं शुभ वाणी प्राप्ताय श्री वदताम्बर जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यश आपका सुरेन्द्र देव, गीत सुनायें ।
चारों दिशा भी आपके, गुणगान को गायें ॥69॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं सुयश प्राप्ताय श्री महायश जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो संपदा के नाथ कृपा, हम पे कीजिये ।
सच्ची है मेरी भक्ति इसपे, ध्यान दीजिये ॥70॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं महासंपदा प्राप्ताय श्री महासंपदा जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे महा शक्तिधारी तुमको, नमस्कार है ।
शक्ति अनंत आप में जी, नमस्कार है ॥71॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं महाशंक्ति प्राप्ताय श्री महाशक्ति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चमकें है तेरी मूर्ति, सूर्य चांद भी फीके ।
रत्नों की ज्योति फीकी, आप सबसे हैं नीके ॥72॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं महाकांति प्राप्ताय श्री महाद्युति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार की न वस्तु कोई, महादानी हो ।
दे ज्ञान दान प्राणियों को, आत्मज्ञानी हो ॥
आतम का ज्ञान देके, आत्म तृप्त कीजिये ।
संतोष दे कुछ ज्ञान दें, औ ध्यान दीजिये ॥73॥

ॐ ह्रीं ज्ञान दान प्राप्ताय श्री महादान जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस क्रोध रूपी शत्रु को, क्षण भर में है नाशा ।
दे क्षमा दान प्राणियों को, हृदय में वासा ॥74॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं क्षमा धर्म प्राप्ताय श्री महाक्रोधरिपु विजय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे महा ध्यानी ध्यान से, आतम को है पाया ।
बाहर को भूला ऐसा, निजातम को है पाया ॥75॥
आतम का ....

ॐ ह्रीं आत्म ध्यान प्राप्ताय श्री महाध्यान पति जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंग प्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं........)

ध्यान में आतम की, गहराई पाई,
नहीं काम शत्रु ने, बाधा लगाई ।
संसार के सुख, हमें नित लुभाते,
रहूँ दूर इनसे, तेरे गीत गाते ॥76॥

ॐ ह्रीं कर्म शत्रु नाशनाय श्री कामारि जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

किया ध्यान आतम का, दक्ष हुये हो ।
मुक्ति की मंजिल का, लक्ष्य लिये हो ॥77॥
संसार ....

ॐ ह्रीं धर्म दक्षता प्राप्ताय श्री दक्ष जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शत्रु को जीता है, मित्र बनाये ।
इसी से तो ''जितमित्र'', आपहि कहाऐ ॥78॥
संसार ....

ॐ ह्रीं सर्व मित्राय श्री जितमित्र जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मृत्यु का आतंक, सबको डराये ।
''जितांतक'' प्रभु ने है, इसको भगाऐ ॥
संसार के सुख, हमें नित लुभाते ।
रहूँ दूर इनसे, तेरे गीत गाते ॥79॥

ॐ ह्रीं मृत्यु आतंक रहिताय श्री जितातंक जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पलना में झूले, न आतम को भूले ।
नाभेय के सुत, चरण हम भी छू लें ॥80॥
संसार ....

ॐ ह्रीं आत्म सुख प्राप्ताय श्री नाभेय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ज्ञान ध्यान में, सबसे हैं उत्तम ।
इसी से चरण पूजूँ, कहते पुरुषोत्तम ॥81॥
संसार ....

ॐ ह्रीं उत्तम पुरुषार्थ प्राप्ताय श्री पुरुषोत्तम जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इष्ट अनिष्ट, नहीं मानते हैं ।
शिष्ट विशिष्ट, तुम्हें जानते हैं ॥82॥
संसार ....

ॐ ह्रीं धर्म विशिष्टता प्राप्ताय श्री विशिष्ट जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब ही दिशाओं में, जिनवर जी दीखें ।
कहीं भी रहें हम तो, उनको ही लेखें ॥83॥
संसार ....

ॐ ह्रीं सर्व दिश प्रभु दर्शन प्राप्ताय श्री चतुरानन जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदा सौख्य पाया, सुखी हमको कर दो ।
सौभाग्य संपत से, झोली को भर दो ॥84॥
संसार ....

ॐ ह्रीं सौभाग्य प्राप्ताय श्री सदा सौख्य जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीनों ही लोको के, अध्यक्ष हो तुम ।
शासन है हम पर, चरण में रखो तुम ॥

संसार के सुख, हमें नित लुभाते ।
रहूँ दूर इनसे, तेरे गीत गाते ॥85॥

ॐ ह्रीं धर्म अध्यक्षता प्राप्ताय श्री अध्यक्ष जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विषयों की चिंता, हमें नित सतायें ।
मनीषी प्रभु दुख, जो मेरा हटायें ॥86॥
संसार ....

ॐ ह्रीं आगम विद्वता प्राप्ताय श्री मनीषी निधन जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनेकान्त धर्म, जगत को बताया ।
भक्तों को जग के, दुखों से छुडाया ॥87॥
संसार ....

ॐ ह्रीं अनेकान्त धर्म प्राप्ताय श्री अनेकान्त जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नों की वर्षा, सदा देव करते ।
श्री ''रत्नगर्भ'' जी, कष्टों को हरते ॥88॥
संसार ....

ॐ ह्रीं रत्नत्रय प्राप्ताय श्री रत्न गर्भ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्ष्मी ने चरणों में, डेरा जमाया ।
करें भक्त जय-जय, तेरा रूप ध्याया ॥89॥
संसार ....

ॐ ह्रीं समवशवरण लक्ष्मी प्राप्ताय श्री लक्ष्मीवान जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तेरी आज्ञा को कोई, टाल न पाया ।
तेरे वचनों से ही, ज्ञान को पाया ॥90॥
संसार ....

ॐ ह्रीं जिनाज्ञा पालनाय श्री अनादि निधन जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आधि न व्याधि, उपाधि नही हैं ।
भक्तों की भी हर, तो मानूँ सही हैं ॥91॥
संसार ....

ॐ ह्रीं मन वचन काया रोग रहिताय श्री स्वास्थ्य जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहीं रागी द्वेषी, नहीं मोह माया ।
तुम्ही वीतरागी हो, पाँऊ मैं छाया ॥

संसार के सुख, हमें नित लुभाते ।
रहूँ दूर इनसे, तेरे गीत गाते ॥92॥

ॐ ह्रीं रागद्वेष रहित भाव प्राप्ताय श्री वीतराग जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारों कषायों को, शान्त किया है ।
तेरी शांत मुद्रा ने, प्रशांत किया है ॥93॥
संसार ....

ॐ ह्रीं कषाय रहित प्राप्ताय श्री प्रशांत जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम सा नहीं दूसरा, जग में कोई ।
तुम्हें देख अंतर की, ज्योति जगाई ॥94॥
संसार ....

ॐ ह्रीं एक आत्मा प्राप्ताय श्री एक जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सृष्टि के आदि में, जन्में हैं स्वामी ।
"पुरुदेव" नाम से, जानेंगे प्राणी ॥95॥
संसार ....

ॐ ह्रीं आत्म सुख प्राप्ताय श्री पुरुदेव जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सभी जीव के हित का, संदेश दीना ।
कल्याण करके, औ भव्यों का कीना ॥96॥
संसार ....

ॐ ह्रीं आत्म कल्याण प्राप्ताय श्री कल्याण जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शिष्यों के गुरुवर हो, सत्पथ दिखाया ।
शिष्यों ने चलकर के, मुक्ति को पाया ॥97॥
संसार ....

ॐ ह्रीं शिष्यत्व गुण प्राप्ताय श्री चराचर गुरु जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन पुष्ट मन पुष्ट, आतम को कीना ।
बनें पुष्ट नामी, जिनालय को चीना ॥98॥
संसार ....

ॐ ह्रीं आतम पुष्ट कराय श्री पुष्ट जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्यक्ष दर्शन, करम कोटि नाशे ।
स्पष्ट दिखता, भरम को विनाशे ॥
संसार के सुख, हमें नित लुभाते ।
रहूँ दूर इनसे, तेरे गीत गाते ॥99॥

ॐ ह्रीं स्पष्ट दर्शन प्राप्ताय श्री स्पष्ट जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शत्रु ना कोई है, जग में तुम्हारा ।
चरणों का मुझको भी, दे दो सहारा ॥100॥
संसार ....

ॐ ह्रीं कर्म शत्रु नाशनाय श्री अप्रतिघात जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारों दिशाओं को, वस्त्र बनाया ।
''दिग्वासा'' नाम को सार्थक कराया ॥101॥
संसार ....

ॐ ह्रीं सर्व दर्शन सुख प्राप्ताय दिग्वास जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ग्रन्थी को खोला, निर्ग्रन्थ हुये हो ।
आतम के ज्ञानी हो, शिव पथ लिये हो ॥102॥
संसार ....

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थ भाव प्राप्ताय श्री निर्ग्रन्थ जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इंद्रिय के चक्षु को, बंद किया है ।
आतम के ज्ञान का, नेत्र खुला है ॥103॥
संसार ....

ॐ ह्रीं ज्ञान नेत्र प्राप्ताय श्री ज्ञान नेत्र जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आलस्य जीव का, शत्रु बड़ा है ।
जिनवर से दूर ये, जाके खड़ा है ॥104॥
संसार ....

ॐ ह्रीं आलस्य रहित जीवन प्राप्ताय श्री अंतद्रालु जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह के नींद में, संसारी सोऐ ।
प्रभु वीतरागी, नहीं क्षण भी खोऐ ॥105॥
संसार ....

ॐ ह्रीं मोह नाशनाय श्री वीतरागी जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्ष की इच्छा, मुमुक्ष बने हो ।
मुमुक्ष हैं हम स्वामी, कर्म हने हो ॥
संसार के सुख, हमें नित लुभाते ।
रहूँ दूर इनसे, तेरे गीत गाते ॥106॥

ॐ ह्रीं मोक्ष प्राप्ताय श्री मुमुक्ष जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घनी पुण्य राशि है, चरणों की दासी ।
जपूँ नाम तेरा, तो शिव पथ प्रवासी ॥107॥
संसार ....

ॐ ह्रीं पुण्य राशि प्राप्ताय श्री पुण्य राशि जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमसे हैं रक्षित, जगत के ये प्राणी ।
जगत्पाल राजा की, वाणी कल्याणी ॥108॥
संसार ....

ॐ ह्रीं जगदीश्वर रक्षित सुख प्राप्ताय श्री जगत्पाल जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णार्घ्य

(शंभू छंद)

हे ऋषभदेव हे आदिनाथ, गुण तेरे आकर गाये हैं ।
शुभ ध्यान की सच्ची दौलत को, चरणों में तेरे पाये हैं ॥
अंदर का सूरज उदय होय, कर्मों के बादल छंट जायें ।
अंदर की आंख खुले तब ही, जा मुक्ति में हम बस जायें ॥

(दोहा)

आपके सम गुण पायकर, सिद्ध होंये स्वाधीन ।
चरणों अर्घ्य चढ़ा रहे, होंय रत्नत्रय लीन ॥

ॐ ह्रीं श्री शत अष्ट नाम सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं क्लीं श्री अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः

जयमाला
दोहा

ध्यान का धन ही श्रेष्ठ है, आतम ध्यान लगाय ।
जयमाला को गा रहे, शत-शत शीश झुकाय ॥

(पद्धरि छंद)

जय ऋषभदेव जय आदिनाथ, चरणों में तेरे झुका माथ ।
गुणगान करें भक्ति से गायें, चरणों में अपना सिर झुकायें ॥1॥

चारों गति तज पंचम गति पाई, तप ध्यान की सिद्धि है सहाई ।
हम गतियों में जा भटके हैं, खुद के कारण ही अटके हैं ॥2॥

गति के अनुरूप ही जीते हैं, और कष्टों को हम सहते हैं ।
नरकों की पीड़ा अपार सही, मुख से कुछ बात न जाये कही ॥3॥

स्वर्गों के सुख भी पाये हैं, इन्द्रिय सुख ने उलझाये हैं ।
सुर गति तज स्थावर जन्में, तब पीड़ा बहुत हुई मन में ॥4॥

तिर्यंच गति में भूख प्यास, बंधन ने बांधा टूटी आश ।
आँखो से आसूं बहते थे, बीमारी के दुख सहते थे ॥5॥

पर नहिं किसी ने ध्यान रखा, डंडो का स्वाद भी खूब चखा ।
मानुष्य गति में चिन्ता खाय, नहिं सच्चा सुख भी यहां पाय ॥6॥

हम अंधकार में खड़े हुये, हम अंधकार से घिरे हुये ।
हमें ज्ञान किरण को पाना है, जड़ चेतन भेद कराना है ॥7॥

संसार में कुछ ना मेरा है, इंद्रिय सुख का ये डेरा है ।
मन मोह-मोह करवाता है, यह मोह ही कष्ट बढ़ाता है ॥8॥

यह मोह हमें भटकाता है, संसार में ये अटकाता है ।
हम मोह नींद से जागेंगे, जड़ छोड़ स्वयं को पायेंगे ॥9॥

तन तज चेतन का ज्ञान करें, तो सच्चे सुख को स्वयं वरें ।
प्रभु तुमने भेद को जाना है, पहना मुक्ति का बाना है ॥10॥

कल्याणक पांच मनाये थे, सुर नर मिलकर हर्षाये थे ।
संपति तृण के सम छोड़ी थी, आतम से दृष्टि जोड़ी थी ॥11॥

परिवार छोड़ एकांत लिया, आतम को ध्यान से जान लिया।
केवल ज्ञानी अंतर्यामी, कैलाश से मुक्ति गये स्वामी ॥12॥

तेरे पीछे हमें आना है, हमको भी मुक्ति पाना है ।
सामर्थ्य शक्ति को प्राप्त करें, कर्मों का शीघ्र ही नाश करें ॥13॥

(दोहा)

ध्यान रूपी दृष्टि मिले, आतम दर्शन पायें ।
आदि प्रभु के चरण में, झुक-झुक अर्घ्य चढ़ायें ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(श्री फल चढ़ायें)

(दोहा)

ध्यान करे जो आपका, मिले सिद्ध उपहार ।
''स्वस्ति'' प्रभु गुण गावती, छूटें कर्म प्रहार ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री आदिनाथ विधान महिमा

(तर्ज - श्री सिद्धचक्र का पाठ ....)

श्री आदिप्रभु विधान, हरे दुख खान, भरे सुख सारा ।
कर्मों के संकट टारा ॥

भक्ति के भावों से करना, व्रत भी चाहो तो तुम धरना ।
भक्ति से बहती, जग में धर्म की धारा ॥
कर्मों के संकट टारा............

मत सोचो मोक्ष न पा सकते, यह सोचो कर्म भगा सकते ।
कर भेद ज्ञान से, कर्मों का संहारा ॥
कर्मों के संकट टारा............

सच्चे सुख की यह नींव धरे, विपदा संकट को शीघ्र हरे ।
श्री आदिनाथ जी, आपहि हो जग तारा ॥
कर्मों के संकट टारा............

श्री आदिप्रभु विधान, हरे दुख खान, भरे सुख सारा ।
कर्मों के संकट टारा ॥

''श्री आदिनाथ विधान आरती'

आदीश्वर बाबा मेरे, काटो सब कर्म के फेरे,
हम सब उतारे तेरी आरती, ओ बाबा हम सब उतारे.......

नाभिराय मरुदेवी के नंदन, जन्म अयोध्या पाया -2
इन्द्र देव सब सेवा करते, सारा जग हर्षाया ॥
बाबा, भक्ति कर हम हर्षाते, चरणों में शीश झुकाते,

हम सब उतारे तेरी.......

जिसने तुमसे नेहा जोड़ा, जग का फंदा तोड़ा-2
राग द्वेष मद मोह हटा के, जग से रिश्ता छोड़ा ॥
बाबा, मेरी भी बिगड़ी बनाओ, उन्नति के पथ दर्शाओ,

हम सब उतारे तेरी.......

आदि प्रभु गुणगान किया है, शुभ परिणाम बनायें-2
सम्यक्दर्शन में यह कारण, भेद ज्ञान प्रगटायें ॥
बाबा, भक्तों के तुम उपकारी, शिव पथ दर्शा अविकारी,

हम सब उतारे तेरी.......

आदीश्वर बाबा मेरे, काटो सब कर्म के फेरे,
हम सब उतारे तेरी आरती, ओ बाबा हम सब उतारे.......

श्री भक्तामर पाठ

हिन्दी अनुवाद

दोहा

आदिकाल में आदि जिन, आये आदिनाथ ।
धर्म धार शिव पथ चले, भक्त झुकायें माथ ॥

शंभू छंद

भक्त झुके चरणों में आके, मुकुट मणि से निकली प्रभा।
पाप तिमिर सब नाश हो गया, दिव्य दिवाकर ज्ञान सभा ॥
भव समुद्र में डूब रहे जो, अवलंबन आपहि देते ।
आदि जिन के चरण कमल को, वंदन बार-बार करते ॥1॥

सकल तत्व के ज्ञाता हैं जो, बुद्धि पटु हर कार्य करे ।
वह सुरेन्द्र भी स्तुति करता, तीन लोक का चित्त हरे ॥
हैं जयवन्त जिनेश्वर जग में, हम जयकार लगाते हैं ।
स्तुति वंदन भक्ति करके, चरणन शीश झुकाते हैं ॥2॥

सुर से अर्चित चरण कमल हैं, ज्ञानी जग में कहलाते ।
मंद बुद्धि मैं स्तुति करता, नहि लज्जा नहि शर्माते ॥
जल में चंद्र की छाया पाने, बालक ही जिद करता है ।
बुद्धिमान सच्चाई जाने, वह तो कर्म को हरता है ॥3॥

हे गुणसागर चंद्र कांति सम, रूप शांति बरसाता है ।
सुर गुरु भक्ति करने जो आता, पूरी ना कह पाता है ॥
प्रलय काल की पवन साथ में, मगर समूह जहां होवे ।
कौन सिन्धु को निज हाथों से, तैर किनारा पा लेवे ॥4॥

शक्ति नहीं भक्ति के बल पर, स्तुति करने आया हूँ ।
लखकर मुद्रा तेरी जिनवर, मन ही मन हर्षाया हूँ ॥
निज शिशु की रक्षा के हेतु, मृगि विचार नहीं करती ।
मृगपति सन्मुख जा करके वो, शिशु रक्षा कर दुख हरती ॥5॥

कम ज्ञानी हूँ ज्ञानी जनों से, हंसने का मैं पात्र बना ।
किन्तु भक्ति प्रेरित करती, अंदर भक्ति का भाव घना ॥
आम्र वृक्ष में बौर आये जब, कोयल स्वयं ही बोल पड़े ।
इसी तरह जिनवर भक्ति में, हम भी चरणन आन खड़े॥6॥

भव अनेक के पाप के बंधन, स्तवन से कट जाते हैं ।
दुष्ट कर्म सब शीघ्रहि भागे, नहि संताप सताते हैं ॥
तीन लोक में भंवरे के सम, तम छाया चहुं ओर घना ।
सूर्य किरण जैसे ही निकले, अंधकार सम्पूर्ण हना ॥7॥

ऐसा मैंने माना तुमको, औ स्तुति आरम्भ करी ।
तीन लोक का चित्त हरेगी, भक्ति तेरी शांति भरी ॥
कमल पत्र पर जल बिन्दु, मोती सम उपमा पाती हैं ।
वैसी स्तुति मेरी जिनवर, सज्जन मन हर्षाती हैं ॥8॥

स्तवन तेरा सब दोषों को, बस क्षण भर में दूर करे ।
कथा आपकी जो भी सुनता, जनम-जनम के पाप हरे ॥
वह हजार किरणों वाला रवि, रहता है जो दूर गगन ।
किन्तु किरण के ही प्रभाव से, खिल जाते है कमल मगन ॥9॥

तीन भुवन के भूषण हो तुम, सब प्राणी के नाथ भी हो ।
प्रभू आप सम इस धरती पर, गुण वाला दूजा ना हो ॥
आश्रित सेवक जो है प्रभु, अपने सम उसको कर लेना ।
नहिं करो तो नहीं प्रयोजन, विनती इतनी सुन लेना ॥10॥

प्रभु निरन्तर लखने योग्य हो, भक्त आपका दर्श करे ।
नहि संतोष कही लख करके, पावन दर्श ही पाप हरे ॥
क्षीर सिन्धु इन्दु सम जल पी, खारा पानी कौन पिये ।
भक्त हृदय में आप बसे हो, और कौन अब आय हिये ॥11॥

शान्त व सुंदर जितने अणु थे, उनसे हुआ है तव निर्माण।
थे उतने ही अणु धरती पर, बाकी सब थे वे निष्प्राण ॥
अद्वितीय सुंदर जिनवर को, देख आंख ना थकती है ।
नहीं आपसा सुंदर कोई, आंख कही ना जाती है ॥12॥

अनुपम सुंदर मुख वाले जिन, सुर नर नेत्र हरण कीना ।
तीन जगत उपमायें जीती, अनुपम नाम को पा लीना ॥
है कलंक से सहित चंद्रमा, कहां तुलनायें कर सकते ।
दिन हो तो फीका पलाश सा, कोई भी ना उसको लखते॥13॥

पूर्ण चंद्र जो कला सहित है, स्वच्छ चांदनी बिखर रही ।
इसी तरह तीनों लोकों में, प्रभु गुण बगिया महक रही ॥
तीन जगत में जिन गुण विचरे, जगन्नाथ पाया आधार ।
रोक कोई भी ना सकता है, शक्तिहीन ना करें प्रहार ॥14॥

यदि देवियों ने प्रभु का मन, डिगा नहीं जो पाया है ।
नहि आश्चर्य है कोई इसमें, लज्जित हो दुख पाया है ॥

प्रलय काल की वायु चलती, पर्वत गिर-गिर जाते हैं ।
किन्तु सुमेरु ना हिलता है, मस्तक फिर झुक जाते हैं ॥15॥

धूम बत्ती और तेल नहीं है, फिर भी दीपक कहलाते ।
तीन जगत को करें प्रकाशित, मुक्ति पथ को दिखलाते ॥
वायु ऐसी तेज चल रही, शिखर गिरी का उड़ जाये ।
हो अपूर्व दीपक प्रभु जग में, कोई नहीं बुझा पाये ॥16॥

अस्त ना होते उदय ना होते, और राहु ना ग्रस पाता ।
सदा प्रकाशित करते जग को, कहलाते प्रभु सुख दाता ॥
घने मेघ भी ढंक सकते ना, ना प्रभाव भी कम होता ।
अतिशय महिमाशाली दिनकर, चरणों में सर झुक जाता ॥17॥

सदा उदित रह करके जिनवर, मोह महातम नष्ट करें ।
राहु गम्य ना मेघ हैं ढंकते, भक्तों का अज्ञान हरें ॥
अधिक कांतिमय रूप है जिनका, मुख मंडल भी दमक रहा।
हे अपूर्व जग के शशांक तुम, ये जग तुमसे चमक रहा ॥18॥

दिव्य तेजमय मुख मंडल जिन, रवि शशि जैसा भाषित है ।
फिर दिन में रवि निशा चंद्र से, होती क्यों वो शासित है ॥
हरे भरे खेतों में फसलें, लहर-लहर लहराती है ।
नहीं काम जल मेघों का फिर, स्वयं-स्वयं हर्षाती हैं ॥19॥

जैसा ज्ञान तुम्हारा जिनवर, सच्चा पथ दिखलाता है ।
हर हरादि में नही है वैसा, बस अज्ञान बढ़ाता है ॥
महारत्नों में किरणें जैसी, नहीं कांच में होती है ।
भक्ति आपकी मेरे जिनवर, सब कर्मों को धोती है ॥20॥

(शेर चाल)

है श्रेष्ठ जग में हर हरादि, को भी देखना ।
संतोष पाया आपमें बस, कुछ ना लेखना ।
धरती पे आपके समान, कोई नहीं है ।
भव-भव में मन को करते हरण, आप सही हैं ॥21॥

शत स्त्रियों ने सैकड़ों ही, पुत्र जने हैं ।
ना दूसरा है आप जैसा, कर्म हने हैं ॥

चारों दिशा नक्षत्र धरें, सूर्य को नहीं ।
है पूर्व दिशा जन्म देती, बात है सही ॥22॥

तुमही परम पुरुष हो प्रभु, मानते मुनि ।
रवि वर्ण वाले आप हो, तम की उड़े धुनि ॥
जो आपको पाता है, मृत्यु पर विजय करे ।
शिव मार्ग आप ही बताये, कार्य सब सरे ॥23॥

अव्यय असंख्य आदि हो, अचिन्तय भी तुम्हीं ।
ब्रह्माण हो ईश्वर अनंत, रूपवान भी ॥
हो योगियों के ईश और, एकानेक भी ।
हो ज्ञान से निर्मल तुम्ही, मुनि कहते हैं सभी ॥24॥

तुम बुद्ध हो स्वर्गों के देव, अर्चना करें ।
शंकर बने हो शांति से, अशांति को हरें ॥
शिव मार्ग बता के बने हो, आप विधाता ।
उत्तम पुरुष भी आप हो, मैं शीश झुकाता ॥25॥

तीनों भुवन के दुःखहारी, नमस्कार है ।
भूषण बने त्रिलोक के जी, नमस्कार है ॥
तीनों जगत के परम ईश, नमस्कार है ।
भव सिन्धु को है सोखते जी, नमस्कार है ॥26॥

(चौपाई)

नहिं आश्चर्य है हे जिनवर जी, दोष ना पाये तुम आश्रय जी ।
दोष विविध आश्रय को पाये, स्वप्न में भी ना प्रभु के आये ॥27॥

तरु अशोक ऊंचा बतलाया, निर्मल रूप प्रभु का भाया ।
किरणों से तम दूर भागता, मेघ बीच ज्यों सूर्य झांकता ॥28॥

सिंहासन मणियों संग प्यारा, उस पर जिन वपु शोभित न्यारा ।
रवि बिम्ब किरणों से शोभित, तम हारी जन-जन का मोहित ॥29॥

स्वर्णमयी तन कान्ति वाला, कुन्द चमर सिर ढुरने वाला ।
स्वर्ण मेरु सम जिनवर तन है, झरना सम ही ढुरे चंवर हैं ॥30॥

चंद्रकांति सम छत्र त्रय हैं, रवि प्रताप को रोके तय है ।
मोती झालर शोभा बढ़ाये, तीन जगत के ईश बताये ॥ ।31।

सभी दिशा दुंदुभि बजती हैं, जिनवर के गुण को कहती हैं।
धर्मराज की जय-जय करती, यश गाथा गा पाप को हरती ॥ ।32।

कल्पवृक्ष की कलियां झरती, जल बिन्दु और वायु चलती ।
श्री जिनेन्द्र की झरती वाणी, जीवों को है यह कल्याणी ॥ ।33।

तन भामंडल का उजियारा, दूर करे जग का अंधियारा ।
कोटि सूर्य औ चंद्र मंद हैं, जिन दर्शन से मन आनंद हैं ॥ ।34।

स्वर्ग मोक्ष की खोज करी है, वाणी आगम तथ्य भरी है ।
दिव्य ध्वनि सब ज्ञान कराये, भाषा स्वयं-स्वयं परिणाये ॥ ।35।

(दोहा)

स्वर्ण कमल की कांति सम, नख की कांति पाये ।
जहां चरण जिनवर धरे, देवनि कमल रचाये ॥ ।36।

महिमा जिनवर आपकी, नहीं दूजे में होय ।
रवि उजाला ज्यों करें, नहिं ग्रहों में होय ॥ ।37।

(शंभु छन्द)

हो मदमत्त कपोल से झरता, मद पर भौरे आते हों ।
क्रोधित रूप भयंकर दिखता, काल सामने पाते हों ॥
ऐसा ऐरावत हाथी भी, यदि सामने आ जाये ।
देख तुम्हें छुटकारा मिलता, नाथ शरण जो पा जाये ॥ ।38।

छिन्न भिन्न गण्डस्थल गज का, उज्जवल रक्त भी बहता है ।
गजमोती से भूषित भूमि, सिंह कभी ना डरता है ॥
ऐसा अधिपति सामने आये, पर हमला ना करता है ।
प्रभु चरणों का आश्रय पाकर, भक्त कष्ट को हरता है ॥ ।39।

प्रलय काल की वायु उद्धत दावानल भी जलती है ।
चिंगारी उड़-उड़ चहुं दिश में, जा-जा करके गिरती है ॥
विश्व को भक्षण कर लेगी वह, ऐसे सामने आती है ।
किन्तु आपके नाम मंत्र से, वह तुरन्त बुझ जाती है ॥ ।40।

कोकिल कंठ आंख में गुस्सा, क्रोध से फण को पटक रहा ।
तेजी से वह आगे आता, बार-बार फण झटक रहा ॥
नाग दमनी सम नाम आपका, जो भी हर क्षण जपता है ।
ऐसे सर्प के सर पर पग रख, आगे वह बढ़ जाता है ॥ ।41।

अश्व ध्वनि गज गर्जित होवे, शोर भयंकर होता है ।
बलशाली नृप आगे बढ़कर, वार निरंतर करता है ॥
रवि तेज सम भूपति आकर, जिसको हर क्षण सता रहा ।
नाम आपका लेते शीघ्रहि, उस राजा को भगा रहा ॥ ।42।

भालों से गज को मारा है, रक्त की नदिया बहती है ।
योद्धा उसमें तैर के आते, मृत्यु सामने दिखती है ॥
उस अजेय को जीत भक्त वह, नाथ का आश्रय जो पाये ।
चरण कमल की महिमा है ये, चरण कमल में झुक जाये ॥ ।43।

सिन्धु क्षुभित भीषण लहरें हैं, जाकर शिखर से टकराती ।
मगरमच्छ घड़ियाल हैं क्रोधित, बड़वानल भी जल जाती ॥
शिखर पे स्थित उस जहाज को, कोई नहीं बचा पाये ।
जाप करें जिनदेव आपका, वह भी दुख से बच जाये ॥ ।44।

भीषण रोग से पीड़ित है जो, और जलोदर से झुकता ।
आशा नहीं है जीवन की औ, मृत्यु राह को वो तकता ॥
किन्तु आपके चरण कमल की, धूल को तन पर लगा लिया।
कामदेव सम सुंदर जग में, रूप को निश्चित धार लिया ॥ ।45।

सिर से पग तक बेड़ी बंधी है, खींच खींच कर कसी हुई ।
जांघे छिली अति दुख पाया, घोर वेदना उसे हुई ।
ऐसा नर यदि नाम आपका, नित्य निरन्तर जपता है ।
बंध रहित हो बेड़ी टूटे, उसको भी सुख मिलता है ॥ ।46।

सिंह द्विपेन्द्र अग्नि वारिधि औ, युद्ध जलोदर बंधन है ।
गुण स्तवन जो करे आपका, होता सुख अभिनंदन है ॥
अष्ट भयों का नाश करे वह, सुख सागर को पाता है ।
भीषण से भीषण कष्टों को, क्षण मे दूर भगाता है ॥ ।47।

हे जिनेन्द्र गुणरूपी माला, आज बनाकर लाया हूँ ।
सुंदर - सुंदर गुण पुष्पों से, इसे सजाकर लाया हूँ ॥
''मानतुंग'' के ही जैसे वह, मुक्ति सुन्दरी वर लेंगे ।
कह ''स्वस्ति'' श्रद्धा के संग जो, इसे कंठ में पहनेंगे ॥ ।48।

व्रत की विधि

श्री आदिनाथ विधान व्रत, प्रभु ऋषभदेव की आराधना साधना और उन जैसे गुणों की प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। इस विधान से मनवांछित फल स्वयं ही प्राप्त होते हैं। क्योंकि प्रभु आदिनाथ स्वयं ही कल्पवृक्ष हैं। प्रभु के गुण अनंत हैं किन्तु 108 गुणों की स्तुति कर व्रत किये जायेंगे। एक गुण में अनंत गुण समाहित हैं। यदि इन्हीं गुणों की साधना भाव से की जाये तो सच्चे सुख की प्राप्ति भी संभव है।

शक्ति के अनुसार एकासन उपवास आदि कर सकते हैं। इस व्रत का प्रारम्भ भगवान आदिनाथ के किसी भी कल्याणक की तिथि से प्रारम्भ करें और मोक्ष कल्याणक की तिथि माघ कृष्ण चतुर्दशी को समापन करें। उद्यापन में श्री आदिनाथ विधान करें एवं इच्छित वस्तु का दान करें। यह व्रत स्वयं करके दूसरे को करने की प्रेरणा दें। इस तरह 108 व्रत करके मनवांछित फल प्राप्त करें।

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुंदुभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
9. ॐ ह्रीं आत्म सामर्थ्य प्राप्ताय श्री स्वयंभुवे जिनाय नमः
10. ॐ ह्रीं आत्म सुख प्राप्ताय श्री भोक्ता जिनाय नमः
11. ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री अपुनर्भवः जिनाय नमः
12. ॐ ह्रीं विश्वविद्या प्राप्ताय श्री विश्वविद्या जिनाय नमः
13. ॐ ह्रीं अनंत दर्शन प्राप्ताय श्री विश्वदृष्टा जिनाय नमः

14. ॐ ह्रीं भाग्योदयाय श्री धाता जिनाय नमः

15. ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री जगत ज्येष्ठ जिनाय नमः

16. ॐ ह्रीं चारू छवि प्राप्ताय श्री विश्व मूर्ति जिनाय नमः

17. ॐ ह्रीं इंद्रिय संयम प्राप्ताय श्री जिनेश्वराय नमः

18. ॐ ह्रीं जिन शरण प्राप्ताय श्री युगादि पुरुष जिनाय नमः

19. ॐ ह्रीं आत्म धर्म प्राप्ताय श्री विश्व धर्मचक्र जिनाय नमः

20. ॐ ह्रीं शत्रुमोह विनाशनाय श्री मोहादि जिनाय नमः

21. ॐ ह्रीं दया धर्म प्राप्ताय श्री दयाधर्म जिनाय नमः

22. ॐ ह्रीं त्रियोग विजय प्राप्ताय श्री योगीश्वर जिनाय नमः

23. ॐ ह्रीं आत्म शुद्धि प्राप्ताय श्री शुद्ध जिनाय नमः

24. ॐ ह्रीं कुशल बुद्धि प्राप्ताय श्री बुद्ध जिनाय नमः

25. ॐ ह्रीं कार्य सिद्धाय श्री सिद्धार्थ जिनाय नमः

26. ॐ ह्रीं अनुशासन गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध शासनाय नमः

27. ॐ ह्रीं ध्यान ध्येय प्राप्ताय श्री ध्येय जिनाय नमः

28. ॐ ह्रीं आत्म स्वभाव प्राप्ताय श्री स्वभाव जिनाय नमः

29. ॐ ह्रीं जरा रहिताय श्री अजर जिनाय नमः

30. ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री श्रीपति जिनाय नमः

31. ॐ ह्रीं शुचि मन प्राप्ताय श्री श्रीशुचि जिनाय नमः

32. ॐ ह्रीं निर्मल मन प्राप्ताय श्री अमल जिनाय नमः

33. ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री निराबाध जिनाय नमः

34. ॐ ह्रीं क्षोभ रहित हृदय प्राप्ताय श्री अक्षोभ्य जिनाय नमः

35. ॐ ह्रीं भवसागर पाराय श्री धर्म तीर्थ जिनाय नमः

36. ॐ ह्रीं आत्म धर्म प्राप्ताय श्री वृषभ ध्वज जिनाय नमः

37. ॐ ह्रीं प्रभु दर्शन प्राप्ताय श्री हिरण्य नाभि जिनाय नमः

38. ॐ ह्रीं प्रभु कृपा प्राप्ताय श्री भूतनाथ जिनाय नमः

39. ॐ ह्रीं चारू सुख प्राप्ताय श्री प्रष्ठ जिनाय नमः

40. ॐ ह्रीं श्रेष्ठ पुण्य प्राप्ताय श्री श्रेष्ठ जिनाय नमः

41. ॐ ह्रीं शोक नाशाय श्री विशोक जिनाय नमः

42. ॐ ह्रीं क्षोभ संसार वैराग्य प्राप्ताय श्री विराग जिनाय नमः

43. ॐ ह्रीं विद्वान गुण प्राप्ताय श्री विद्वान जिनाय नमः

44. ॐ ह्रीं ईर्ष्या नाशाय श्री वीतमत्सर जिनाय नमः

45. ॐ ह्रीं आत्म शान्ति प्राप्ताय श्री शान्ति जिनाय नमः

46. ॐ ह्रीं प्रभु पूजा व्रत प्राप्ताय श्री यागाज्ञ जिनाय नमः

47. ॐ ह्रीं अध्यातम अमृत प्राप्ताय श्री अमृत जिनाय नमः

48. ॐ ह्रीं अचल ध्यान प्राप्ताय श्री अचल जिनाय नमः

49. ॐ ह्रीं कर्म लेप रहिताय श्री निर्लेप जिनाय नमः

50. ॐ ह्रीं अनंत तेज प्राप्ताय श्री सूर्य मूर्ति जिनाय नमः

51. ॐ ह्रीं मंत्र स्थित देवता नमस्काराय श्री मंत्र मूर्ति जिनाय नमः

52. ॐ ह्रीं शुभ कृत कराय श्री कृतार्थ जिनाय नमः

53. ॐ ह्रीं अंतरंग प्रसन्नता प्राप्ताय श्री प्रसन्न जिनाय नमः

54. ॐ ह्रीं उत्तम पद प्राप्ताय श्री उत्तम पुराण पुरुषोत्तम जिनाय नमः

55. ॐ ह्रीं उत्तम रूप प्राप्ताय श्री स्तवन जिनाय नमः

56. ॐ ह्रीं सर्व गुण प्राप्ताय श्री गुणनायक जिनाय नमः

57. ॐ ह्रीं उत्कृष्ट पुण्य प्राप्ताय श्री पुण्य जिनाय नमः

58. ॐ ह्रीं मार्दव धर्म प्राप्ताय श्री निर्मद जिनाय नमः

59. ॐ ह्रीं निकलंक सौख्य प्राप्ताय श्री निष्कलंक जिनाय नमः

60. ॐ ह्रीं अचिन्त्य वैभव प्राप्ताय श्री अचिन्त्य वैभव जिनाय नमः

61. ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री पिता जिनाय नमः

62. ॐ ह्रीं मन वांछित फल प्राप्ताय श्री कल्पवृक्ष जिनाय नमः

63. ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री हेतु जिनाय नमः

64. ॐ ह्रीं शुभ लक्षण प्राप्ताय श्री लक्षण जिनाय नमः

65. ॐ ह्रीं शुभ संकल्प धारणाय श्री सिद्ध संकल्प जिनाय नमः

66. ॐ ह्रीं ऋद्धि धर गुरु सान्निध्य प्राप्ताय श्री महर्द्धिक जिनाय नमः

67. ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित सुख प्राप्ताय श्री अनादि निधन जिनाय नमः

68. ॐ ह्रीं शुभ वाणी प्राप्ताय श्री वदताम्बर जिनाय नमः

69. ॐ ह्रीं सुयश प्राप्ताय श्री महायश जिनाय नमः

70. ॐ ह्रीं महासंपदा प्राप्ताय श्री महासंपदा जिनाय नमः

71. ॐ ह्रीं महाशक्ति प्राप्ताय श्री महाशक्ति जिनाय नमः

72. ॐ ह्रीं महाकांति प्राप्ताय श्री महाद्युति जिनाय नमः

73. ॐ ह्रीं ज्ञान दान प्राप्ताय श्री महादान जिनाय नमः

74. ॐ ह्रीं क्षमा धर्म प्राप्ताय श्री महाक्रोधरिपु जिनाय विजय नमः

75. ॐ ह्रीं आत्म ध्यान प्राप्ताय श्री महाध्यान पति जिनाय नमः

76. ॐ ह्रीं कर्म शत्रु नाशनाय श्री कामारि जिनाय नमः

77. ॐ ह्रीं धर्म दक्षता प्राप्ताय श्री दक्ष जिनाय नमः

78. ॐ ह्रीं सर्व मित्राय श्री जिता मित्र जिनाय नमः

79. ॐ ह्रीं मृत्यु आतंक रहिताय श्री जितातंक जिनाय नमः

80. ॐ ह्रीं आत्म सुख प्राप्ताय श्री नाभेय जिनाय नमः

81. ॐ ह्रीं उत्तम पुरुषार्थ प्राप्ताय श्री पुरुषोत्तम जिनाय नमः

82. ॐ ह्रीं धर्म विशिष्टता प्राप्ताय श्री विशिष्ट जिनाय नमः

83. ॐ ह्रीं सर्व दिश प्रभु दर्शन प्राप्ताय श्री चतुरानन जिनाय नमः

84. ॐ ह्रीं सौभाग्य प्राप्ताय श्री सदा सौख्य जिनाय नमः

85. ॐ ह्रीं धर्म अध्यक्षता प्राप्ताय श्री अध्यक्ष जिनाय नमः

86. ॐ ह्रीं आगम विद्वता प्राप्ताय श्री मनीषी निधन जिनाय नमः

87. ॐ ह्रीं अनेकान्त धर्म प्राप्ताय श्री अनेकान्त जिनाय नमः

88. ॐ ह्रीं रत्नत्रय प्राप्ताय श्री रत्न गर्भ जिनाय नमः

89. ॐ ह्रीं समवशरण लक्ष्मी प्राप्ताय श्री लक्ष्मीवान जिनाय नमः

90. ॐ ह्रीं जिनाज्ञा पालनाय श्री अनादि निधन जिनाय नमः

91. ॐ ह्रीं मन वचन काया रोग रहिताय श्री स्वास्थ्य जिनाय नमः

92. ॐ ह्रीं रागद्वेष रहित भाव प्राप्ताय श्री वीतराग जिनाय नमः

93. ॐ ह्रीं कषाय रहित प्राप्ताय श्री प्रशांत जिनाय नमः

94. ॐ ह्रीं एक आत्मा प्राप्ताय श्री एक जिनाय नमः

95. ॐ ह्रीं आत्म सुख प्राप्ताय श्री पुरुदेव जिनाय नमः

96. ॐ ह्रीं आत्म कल्याण प्राप्ताय श्री कल्याण जिनाय नमः

97. ॐ ह्रीं शिष्यत्व गुण प्राप्ताय श्री चराचर गुरु जिनाय नमः

98. ॐ ह्रीं आतम पुष्ट कराय श्री पुष्ट जिनाय नमः

99. ॐ ह्रीं स्पष्ट दर्शन प्राप्ताय श्री स्पष्ट जिनाय नमः

100. ॐ ह्रीं कर्म शत्रु नाशनाय श्री अप्रतिघात जिनाय नमः

101. ॐ ह्रीं सर्व दर्शन सुख प्राप्ताय दिग्वास जिनाय नमः

102. ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थ भाव प्राप्ताय श्री निर्ग्रंथ जिनाय नमः

103. ॐ ह्रीं ज्ञान नेत्र प्राप्ताय श्री ज्ञान नेत्र जिनाय नमः

104. ॐ ह्रीं आलस्य रहित जीवन प्राप्ताय श्री अतंद्रालु जिनाय नमः

105. ॐ ह्रीं मोह नाशनाय श्री वीतरागी जिनाय नमः

106. ॐ ह्रीं मोक्ष प्राप्ताय श्री मुमुक्ष जिनाय नमः

107. ॐ ह्रीं पुण्य राशि प्राप्ताय श्री पुण्य राशि जिनाय नमः

108. ॐ ह्रीं जगदीश्वर रक्षित सुख प्राप्ताय श्री जगत्पाल जिनाय नमः

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः

(इति विधान सम्पूर्ण)